



Journal of INDIAN KNOWLEDGE STUDIES (JIKS)

भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक वित्तीय प्रबंध का संक्षिप्त अध्ययन

डॉ प्रीति रानी सेन

वाणिज्य विभाग श्री द्रोणाचार्य पी.जी. कॉलेज दनकौर गौतमबुद्ध नगर

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा में वित्तीय प्रबंधन (Financial Management) करना ना केवल लाभ कमाने का साधन था, बल्कि धर्म और नैतिकता पर आधारित 'अर्थ' (धन) का सृजन, संरक्षण और वितरण है। यह "योगक्षेम" (प्राप्त का संरक्षण और अप्राप्त का अर्जन) पर केंद्रित था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कराधान, राजकोषीय अनुशासन, और 'व्यय' से पहले 'आय' की सुनियोजित व्यवस्था का विवरण किया गया। भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System-IKS) विश्व की प्राचीनतम ज्ञान परंपराओं में से एक है। इसमें केवल आध्यात्मिक या दार्शनिक चिंतन ही नहीं, बल्कि शासन, अर्थव्यवस्था, व्यापार, कर व्यवस्था, वित्तीय अनुशासन तथा संसाधन प्रबंधन के व्यावहारिक सिद्धांत भी समाहित हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र, वेद, उपनिषद, महाभारत तथा भगवद्गीता जैसे ग्रंथों में आर्थिक समृद्धि, नैतिक व्यापार, राजस्व प्रबंधन और लोककल्याण पर विशेष बल दिया गया है। आधुनिक वित्तीय प्रबंध का उद्देश्य निवेश, पूंजी संरचना, लाभ अधिकतमकरण, जोखिम प्रबंधन तथा शेयरधारकों के मूल्य में वृद्धि करना है। वर्तमान वैश्विक आर्थिक परिवेश में केवल लाभ कमाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, नैतिकता और सतत विकास भी समान रूप से महत्वपूर्ण हो गए हैं।

यह शोध-पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक वित्तीय प्रबंध के बीच संबंध, समानताओं तथा समकालीन संदर्भ में उनकी उपयोगिता का अध्ययन करता है। अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है और निष्कर्ष बताता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के नैतिक एवं लोककल्याणकारी सिद्धांत आधुनिक वित्तीय प्रबंधन को अधिक उत्तरदायी एवं टिकाऊ बना सकते हैं।

मुख्य शब्द

वित्तीय, अर्थव्यवस्था, पूंजी
संरचना, कर, व्यापार

ARTICLE HISTORY

Received: 15 September 2026

Revised: 22 September 2026

Accepted: 30 September 2026

Published: 12 October 2026

CITATION

डॉ प्रीति रानी सेन., (2026). भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक वित्तीय प्रबंध का संक्षिप्त अध्ययन. *Journal of Indian Knowledge Studies (J. Indian Knowl. Stud.)*, 1(2), 43-47.
<https://doi.org/10.71371/jiks. 43-47>

प्रस्तावना

भारत प्राचीन काल से ज्ञान, विज्ञान, व्यापार और आर्थिक संगठन का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर मौर्य और गुप्त काल तक भारत की आर्थिक व्यवस्था सुव्यवस्थित थी। कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र प्रशासन, कराधान, व्यापार नीति, सार्वजनिक वित्त तथा संसाधन प्रबंधन का अत्यंत विकसित ग्रंथ माना जाता है। इस शोधपत्र के माध्यम से विभिन्न भाषाओं में लिखे गए धार्मिक ग्रंथों

को प्रस्तुत करना है, जैसे शास्त्रीय (पाली, संस्कृत, तमिल, फ़ारसी) और मध्यकालीन ग्रंथ (तेलुगु, पंजाबी, कन्नड़, बांग्ला आदि), जो हमें धन का सही प्रबंधन में सही मार्गदर्शन करते हैं। ये ग्रंथ केवल धन कमाने तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि बचत, व्यय और निवेश के बारे में भी सिखाते हैं। यह शोधपत्र शास्त्रीय ग्रंथों और वित्तीय शिक्षाओं के बीच कई संबंध स्थापित करता है। इस शोधपत्र की उपदेशात्मक

प्रकृति इसकी सीमाएँ निर्धारित करती है, जिसमें विशिष्ट संदर्भ भी शामिल हैं। वित्तीय शिक्षाएँ आधुनिक युग में व्यवहार में लाने के लिए हैं, जबकि भारत में इन्हें हजारों वर्ष पहले हमारे प्राचीन ग्रंथों में सिखाया गया है। हमें इन्हें पहचानना होगा ताकि इन्हें विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके।

वर्तमान समय में आधुनिक वित्तीय प्रबंध (Modern Financial Management) निवेश निर्णय, वित्तीय योजना, पूंजी संरचना, कार्यशील पूंजी प्रबंधन, जोखिम नियंत्रण तथा लाभांश नीति जैसे विषयों पर केंद्रित है। यद्यपि आधुनिक वित्तीय सिद्धांत वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक हैं, फिर भी उनमें नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की आवश्यकता लगातार बढ़ रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा इस कमी को पूरा करने की क्षमता रखती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) ने भी भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान का महत्वपूर्ण भाग बनाने पर बल दिया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक वित्तीय प्रबंध का संक्षिप्त अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राचीन भारतीय सिद्धांतों का अन्वेषण :- भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के प्रमुख ग्रंथों—विशेषकर कौटिल्य के अर्थशास्त्र, वेदों और स्मृतियों में वर्णित धन प्रबंधन, व्यापार और कराधान प्रणाली का विश्लेषण करना।
2. आधुनिक वित्तीय प्रबंध से तुलना :- आधुनिक वित्तीय प्रबंधन तकनीकों (जैसे- जोखिम प्रबंधन, निवेश विश्लेषण, और पूंजी बजटिंग) और प्राचीन भारतीय आर्थिक विचारों के मध्य व्यावहारिक और सैद्धांतिक तुलना करना।
3. नैतिकता और मानवीय मूल्यों की पहचान :- आधुनिक कॉर्पोरेट फाइनेंस में 'अधिकतम लाभ' (Profit Maximization) की दौड़ के विपरीत भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित 'धर्म' (Ethics/Righteous Conduct) और 'संतुलित धन उपार्जन' के महत्व को समझना।
4. दीर्घकालिक संपदा निर्माण का अध्ययन :- भारतीय परिवारों और व्यवसायों में पीढ़ियों से चली आ रही बचत (Saving) और वित्तीय व्यवहार की आदतों का अध्ययन करना, जो आधुनिक व्यवहारिक वित्त (Behavioral Finance) से जुड़ी हुई हैं।

5. व्यावसायिक सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) :- आधुनिक कॉर्पोरेट गवर्नेंस और CSR नियमों की तुलना प्राचीन भारतीय अवधारणाओं—जैसे दान, अपरिग्रह और 'लोक कल्याण' से करना।
6. आधुनिक चुनौतियों का समाधान खोजना :- वर्तमान आर्थिक अनिश्चितताओं, बाजार के जोखिमों और तनाव के प्रबंधन में भारतीय दर्शन (जैसे श्रीमद्भगवद्गीता के निष्काम कर्म) की प्रासंगिकता और उपयोगिता का मूल्यांकन करना।
7. सतत विकास और जोखिम प्रबंधन :- आधुनिक वित्तीय जगत में चाणक्य के अर्थशास्त्र और वैदिक ग्रंथों में वर्णित बचत, कर-प्रणाली (राजस्व), और संतुलित व्यय के सिद्धांतों को अपनाकर दीर्घकालिक वित्तीय स्थिरता प्राप्त करना।
8. जनकल्याण का समावेश करना ताकि भ्रष्टाचार और मुक्त निर्णय-प्रक्रिया :- भगवद गीता के 'निष्काम कर्म' और संतुलन के दर्शन को आधुनिक शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव और निवेश के जोखिमों में लागू करना, जिससे निवेशक और प्रबंधक मानसिक शांति और विवेक के साथ निर्णय ले सकें।
9. सांस्कृतिक और स्वदेशी मॉडल का विकास :- पश्चिमी प्रबंधकीय विचारों के विकल्प के रूप में ऐसे हाइब्रिड (संकर) वित्तीय मॉडलों का निर्माण करना जो वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी होने के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक परिवेश के अनुकूल हों।

शोध पद्धति

यह शोध पूरी तरह द्वितीयक (Secondary Data) स्रोतों पर आधारित है। अध्ययन सामग्री पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, भारतीय ज्ञान प्रणाली से संबंधित साहित्य तथा वित्तीय प्रबंधन विषयक मानक पुस्तकों से संकलित की गई है। विश्लेषण वर्णनात्मक (Descriptive) एवं तुलनात्मक (Comparative) पद्धति पर आधारित है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में वित्तीय प्रबंधन

1. कौटिल्य का अर्थशास्त्र :- कौटिल्य ने राजस्व संग्रह, कराधान, सार्वजनिक व्यय, वित्तीय नियंत्रण तथा भ्रष्टाचार रोकने के लिए स्पष्ट नियम दिए। उनके अनुसार राज्य की आर्थिक समृद्धि ही राष्ट्र की शक्ति का आधार है।

2. भगवद्गीता :-गीता में निष्काम कर्म, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और आत्मसंयम पर बल दिया गया है। ये सिद्धांत आधुनिक कॉर्पोरेट गवर्नेंस और व्यावसायिक नैतिकता के आधार बन सकते हैं।
3. वेद एवं उपनिषद :-इन ग्रंथों में संतुलित उपभोग, संसाधनों का संरक्षण तथा प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने पर बल दिया गया है।
4. योगक्षेम :-धन को बचाकर रखना और उसे सही कार्यों में लगाकर बढ़ाना।
5. अर्थ और धर्म :-धन का उपार्जन अनैतिक न हो। आचारशास्त्र (Ethics) अनिवार्य है।
6. उचित कराधान :- प्रजा को कष्ट न देकर कराधान (Taxation) का सिद्धांत।
7. व्यवस्थित व्यय :-आय-व्यय की निगरानी और राजकोष का सदुपयोग।
8. धन का सही प्रयोग :- आवश्यकता पड़ने पर ही धन खर्च करना, न कि दिखावे पर।
9. सादा जीवन :- आवश्यकताएं सीमित रखना (स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का गांधीवादी दृष्टिकोण)।

आधुनिक वित्तीय प्रबंध

आधुनिक वित्तीय प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य संगठन के मूल्य (Firm Value) को अधिकतम करना है।

आधुनिक वित्तीय प्रबंध मुख्य रूप से शेयरधारकों की संपत्ति (Wealth Maximization) और दीर्घकालिक स्थिरता को अधिकतम करने पर केंद्रित है।

निवेश निर्णय:- निवेश निर्णय यह तय करना कि कंपनी अपने संसाधनों (फंड) का निवेश किन दीर्घकालिक परियोजनाओं या संपत्तियों में करे, ताकि अधिकतम लाभ और रिटर्न प्राप्त हो सके।

वित्तपोषण निर्णय:- संचालन और विकास के लिए आवश्यक पूंजी को कहां से जुटाया जाए। इसमें ऋण (Debt) और इक्विटी (Equity) का सबसे अच्छा और संतुलित मिश्रण तय करना शामिल है।

लाभांश निर्णय:- कंपनी द्वारा कमाए गए मुनाफे का कितना हिस्सा शेयरधारकों को लाभांश (Dividend) के रूप में बांटा जाए और कितना हिस्सा व्यवसाय में पुनर्निवेश (Reinvestment) के लिए रखा जाए। आधुनिक वित्तीय प्रबंध के मुख्य प्रकार/घटक (Types

based on Areas)

कार्यशील पूंजी प्रबंधन:- दैनिक व्यावसायिक संचालन को सुचारू रूप से चलाने और नकदी प्रवाह (Cash Flow) को बनाए रखने के लिए चालू संपत्तियों और देनदारियों के बीच संतुलन बनाना।

जोखिम और अनुपालन प्रबंधन:- बाजार में उतार-चढ़ाव, मुद्रास्फीति या वित्तीय घाटे से बचने के लिए जोखिमों का आकलन करना और आंतरिक नियंत्रण बनाए रखना।

अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रबंधन:- बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए विदेशी मुद्रा जोखिम, अंतर्राष्ट्रीय निवेश और सीमा पार लेनदेन का प्रबंधन करना।
राजकोष प्रबंधन :- अल्पकालिक और दीर्घकालिक नकदी की उपलब्धता, तरलता और कंपनी की साख (Liquidity) को प्रबंधित करना।

वित्तीय नियोजन और रिपोर्टिंग:- कंपनी के वित्तीय लक्ष्यों को निर्धारित करना, बजट बनाना और हितधारकों को पारदर्शी वित्तीय रिपोर्ट प्रदान करना।

आज डिजिटल बैंकिंग, फिनटेक (Fintech), कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तथा डेटा विश्लेषण वित्तीय निर्णयों को अधिक प्रभावी बना रहे हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक वित्तीय प्रबंध का तुलनात्मक अध्ययन :- भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge Systems) और आधुनिक वित्तीय प्रबंध (Modern Financial Management) के बीच कई समानताएं और अंतर हैं। आधुनिक वित्त केवल लाभ और शेयरधारक मूल्य (Shareholder Value) पर केंद्रित है, जबकि भारतीय ज्ञान परंपरा नैतिक मूल्यों, सामाजिक कल्याण (सर्वे भवन्तु सुखिनः) और दीर्घकालिक स्थिरता पर जोर देती है। दोनों प्रणालियों का एक संक्षिप्त तुलनात्मक अध्ययन निम्नलिखित है :-

1. भारतीय ज्ञान परंपरा धन को साधन माना गया है, साध्य नहीं। उपनिषद और अर्थशास्त्र सिखाते हैं कि धन का उपयोग धर्म (नैतिकता) और समाज कल्याण के लिए होना चाहिए। आधुनिक वित्तीय प्रबंध इसका प्राथमिक लक्ष्य लाभ को अधिकतम करना (Profit Maximization) और संपत्ति का सृजन करना है।
2. भारतीय ज्ञान परंपरा यह 'संतुलन' और 'दूरदर्शिता' पर आधारित है। चाणक्य के अर्थशास्त्र में आपातकाल के लिए धन संचय (कोष) का नियम है, जो आज के Emergency Fund और Risk Hedging के समान है। आधुनिक वित्तीय प्रबंध इसमें

- जोखिम को मापने के लिए जटिल गणितीय मॉडल
3. भारतीय ज्ञान परंपरा "आय का एक चौथाई भाग बचाएं" जैसे सिद्धांत सदियों से भारतीय परिवारों का हिस्सा रहे हैं। यह मितव्ययिता (Frugality) और संपत्ति के विकेंद्रीकरण पर जोर देता है। आधुनिक वित्तीय प्रबंधन धन को निवेश करने के लिए Mutual Funds, Stocks, और Bonds जैसे साधन हैं।
 4. भारतीय ज्ञान परंपरा इसमें व्यापार और नैतिकता अलग नहीं हैं। 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना के साथ ईमानदारी, पारस्परिकता (Reciprocity), और प्रकृति के दोहन की बजाय पोषण का सिद्धांत निहित है। व्यावसायिक नैतिकता (Business Ethics) आधुनिक वित्तीय प्रबंधन इसमें Corporate Social Responsibility (CSR) को कानूनी रूप दिया गया है।
 5. भारतीय ज्ञान परंपरा निर्णय दूरदर्शिता, कर्म के सिद्धांत, और व्यापक मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखकर लिए जाते हैं। निर्णय लेने का आधार आधुनिक वित्तीय प्रबंधन यह विशुद्ध रूप से डेटा, NPV (Net Present Value), और ROI (Return on Investment) पर निर्भर करता है।
 6. आधुनिक वित्तीय प्रबंधन में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता और अनुप्रयोग- आधुनिक वित्त और प्रबंधन में इस परंपरा की प्रासंगिकता और अनुप्रयोग के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं
 7. नैतिक धन सृजन :- भारतीय ग्रंथों में धन को महत्वपूर्ण माना गया है, लेकिन उसे 'धर्म' (नैतिकता) के दायरे में रखने की वकालत की गई है। आधुनिक 'कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व' (CSR) और 'ESG' (पर्यावरण, सामाजिक और शासन) के सिद्धांत इसी प्राचीन विचार (लोक कल्याण) पर आधारित हैं।
 8. कौटिल्य का अर्थशास्त्र और राजकोष प्रबंधन :- कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' आज के वित्तीय जोखिम प्रबंधन, कराधान (Taxation), और राजकोषीय प्रशासन का आधार है। उनके 'योगक्षेम' (कल्याणकारी राज्य) के सिद्धांत का पालन करते हुए आधुनिक वित्तीय नीतियां जन-कल्याण और समावेशी विकास पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं।
 9. अपरिग्रह और अपव्यय नियंत्रण :- भारतीय दर्शन का 'अपरिग्रह' सिद्धांत (आवश्यकता से अधिक संचय न करना) आधुनिक मितव्ययिता और स्थायी (Sustainable)

(Variance, और CAPM) का उपयोग किया जाता है।

व्यावसायिक प्रथाओं का मार्गदर्शक है। यह कंपनियों को फिजूलखर्ची रोकने और संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग (Optimal Resource Management) में मदद करता है।

10. दीर्घकालिक दृष्टिकोण और स्थिरता :- पाश्चात्य वित्तीय मॉडल अक्सर त्रैमासिक (Quarterly) लाभ पर केंद्रित होते हैं, जबकि भारतीय ज्ञान परंपरा 'कर्मफल' के सिद्धांत के माध्यम से दीर्घकालिक स्थिरता (Long-term Sustainability) और दूरदर्शी निर्णय लेने पर जोर देती है।

प्रमुख चुनौतियाँ और विरोधाभास

1. लाभ बनाम नैतिकता की लड़ाई: आधुनिक कॉर्पोरेट जगत में अत्यधिक लाभ कमाने की होड़, भारतीय ज्ञान परंपरा के 'सत्यनिष्ठा' और 'अपरिग्रह' (सीमित संग्रह) जैसे सिद्धांतों के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है।
2. तकनीकी V/S आध्यात्मिक दृष्टिकोण :- आधुनिक फाइनेंस क्वांटिटेटिव (संख्यात्मक) है, जबकि भारतीय परंपरा गुणात्मक (मूल्य-आधारित) है। इन दोनों का व्यावहारिक तालमेल बिठाना एक तकनीकी चुनौती है।
3. सिद्धांतों का अनुकूलन :- प्राचीन बही-खाता या हुंडी प्रणाली को वर्तमान डिजिटल बैंकिंग और जटिल शेयर बाजारों के साथ जोड़ना आसान नहीं है।
4. व्यक्तिगत हित V/S सामूहिक हित :- आधुनिक वित्त 'शेयरधारक के लाभ' पर केंद्रित है, जबकि भारतीय परंपरा 'स्टेकहोल्डर' (कर्मचारी, समाज और पर्यावरण) के कल्याण की बात करती है।
5. सुझाव
6. 1. वित्तीय प्रबंधन के पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल किया जाए।
7. 2. कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर आधुनिक शोध को प्रोत्साहित किया जाए।
8. 3. कॉर्पोरेट क्षेत्र में नैतिक वित्तीय प्रशिक्षण अनिवार्य बनाया जाए।
9. 4. CSR एवं ESG के साथ भारतीय लोककल्याणकारी सिद्धांतों का समन्वय किया जाए।

10. 5. विश्वविद्यालयों में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं वित्तीय प्रबंधन पर अंतर्विषयी शोध को बढ़ावा दिया जाए।

निष्कर्ष:

भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक वित्तीय प्रबंधन एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। आधुनिक वित्तीय उपकरण (Tools) और तकनीकें धन कमाने में मदद करती हैं, जबकि भारतीय ज्ञान परंपरा उस धन के सही उपयोग, स्थायित्व और मानसिक शांति का मार्ग प्रशस्त करती है। आधुनिक वित्तीय प्रबंधन जहाँ दक्षता, लाभ

और प्रतिस्पर्धात्मकता पर बल देता है, वहीं भारतीय ज्ञान परंपरा नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, पारदर्शिता और दीर्घकालिक कल्याण को प्राथमिकता देती है। यदि आधुनिक वित्तीय प्रबंधन में भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों का समुचित समावेश किया जाए, तो अधिक उत्तरदायी, पारदर्शी तथा सतत आर्थिक व्यवस्था विकसित की जा सकती है। विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की प्राप्ति में यह समन्वित दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

संदर्भ

1. कौटिल्य. अर्थशास्त्र।
2. श्रीमद्भगवद्गीता।
3. M. Pandey. Financial Management.
4. Prasanna Chandra. Financial Management: Theory and Practice.
5. National Education Policy (NEP), 2020.
6. "Decoding Wealth Management and Financial Systems in Ancient India."
7. भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं आधुनिक शिक्षा पर प्रकाशित शोध।
8. P.I.B

COPYRIGHT:

© 2026 The Author(s). This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited. See <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>